INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 5, May 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और सतत विकास लक्ष्य

यति अरुण[1] व डॉ0 दिनेश सिंह[2]

शोध छात्रा, इतिहास विभाग, वी0रा0अ0लो0 राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली, उ0प्र0
असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास विभाग, वी0रा0अ0लो0 राजकीय महिला महाविद्यालय बरेली, उ0प्र0 (एम0जे0पी0 रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली उ0प्र0)
ईमेल- drdineshhistory@gmail.com

शोध सार:- *वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता और सांस्कृतिक विघटन जैसी चुनौतियां मानव सभ्यता के समक्ष गंभीर प्रश्न खड़े कर रही हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु यूनाइटेड नेशंस ने 2015 में 17 सतत विकास लक्ष्यों को स्वीकृति प्रदान की। इन लक्ष्यों का उद्देश्य वर्ष 2030 तक सतत, समावेशी और न्याय पूर्ण विकास सुनिश्चित करना है। भारतीय ज्ञान प्रणालियां हजारों वर्षों से प्रकृति, समाज और मानव जीवन के बीच संतुलन की अवधारणा को प्रतिपादित करती रही हैं। वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग, वास्तुशास्त्र, कृषि परंपराएं, लोक ज्ञान और ग्राम स्वराज की अवधारणा भारतीय चिंतन की आधारशिला रहे हैं। यह शोध-पत्र भारतीय ज्ञान प्रणालियों और सतत विकास लक्ष्यों के मध्य अंतरसंबंधों का विश्लेषण करता है। एवं भारतीय परंपरागत ज्ञान वैश्विक सतत विकास एजेंडा के लिए एक वैकल्पिक एवं समृद्ध दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।*

मुख्य शब्द:- भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ, तर्कसंगत, सतत विकास, आध्यात्मिक एवं नैतिक, पारंपरिक ज्ञान, लक्ष्यों, वैश्विक चुनौतियाँ, भारतीय चिंतन

प्रस्तावना:- 21वीं सदी में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता, गरीबी, स्वास्थ्य संकट और सामाजिक असमानताएं वैश्विक चिंताओं के प्रमुख विषय बन चुके हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में "सर्वे भवंतु सुखिनः" और "वसुधैव कुटुंबकम" जैसे सिद्धांत मानव और प्रकृति के सह अस्तित्व पर बल देते हैं। यहां विकास का अर्थ केवल आर्थिक उन्नति नहीं, बल्कि नैतिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय संतुलन भी है। वहीं दूसरी तरफ भारतीय ज्ञान प्रणालियां केवल नैतिक उपदेश नहीं, अपितु सतत जीवन शैली के मार्गदर्शक हैं। भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान पहुँचाने का एक व्यवस्थित और संरचनात्मक तरीका है। यह सिर्फ़ एक परंपरा के बजाय ज्ञान स्थानांतरण की एक प्रक्रिया के तौर पर अपनी पहचान बनाता है। वैदिक साहित्य, उपनिषदों, वेदों और उपवेदों में निहित, यह एक बुनियादी सिद्धांत के तौर पर काम करता है जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) ने भी मान्यता दी है। इसका प्रभाव भारत की पारंपरिक और दूसरी भाषाओं तक फैला हुआ है, जिसे अलग-अलग तरीकों से प्रसारित किया जाता है, जिसमें दस्तावेज, बोलचाल की और कलात्मक परंपराएं शामिल हैं। इस पूरी ज्ञान प्रणाली में प्राचीन भारत का ज्ञान शामिल है, जिसमें इसकी उपलब्धियां और चुनौतियां दोनों शामिल हैं। यह भारत की भविष्य की उम्मीदों को समझने के लिए एक आधार देता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और जीवन के सभी पहलुओं जैसे ज़रूरी पहलुओं को शामिल किया गया है। वास्तव में, भारतीय ज्ञान प्रणाली ज्ञान के भंडार के रूप में काम करती है जो भारतीय समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक पहलुओं को आकार देती रहती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. भारतीय ज्ञान प्रणालियों की मूल अवधारणाओं का विश्लेषण करना।
2. सतत विकास लक्ष्यों की संक्षिप्त व्याख्या करना।
3. भारतीय ज्ञान प्रणालियों और सतत विकास लक्ष्यों का एक समन्वित और वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तावित करना।

शोध पद्धति:- यह शोध-पत्र डाटा के द्वितीयक स्त्रोतों जैसे वेबसाइट, जर्नल, लेख, पुस्तकों एवं अन्य स्त्रोतों पर आधारित है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ बहुस्तरीय और बहुआयामी हैं। यह उन समग्र बौद्धिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का समूह है जो हजारों वर्षों में भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित हुईं। यह प्रणालियाँ केवल धार्मिक या आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि इनमें गणित, खगोल-शास्त्र, चिकित्सा, कृषि, वास्तुशास्त्र, नैतिकता, राज्य-शास्त्र, कला, शिक्षा, संगीत, पर्यावरण, सामाजिक संगठन और जीवन दर्शन जैसे आयाम शामिल हैं। भारतीय ज्ञान की विशेषता यह है कि यह समग्र (Holistic), अनुभवपरक (Experiential), तर्कसंगत (Rational) और लोक आधारित (People Centric) है। इसमें ज्ञान का उद्देश्य केवल सूचना संग्रह या तकनीकी प्रगति नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज का नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान भी है।

भारतीय ज्ञान की जड़ें प्रागैतिहासिक काल में मिलती हैं। जब मानव ने प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए जीवन जीने की विधियां विकसित कीं। शिकार, कृषि, पशुपालन, अग्नि का उपयोग और औजार निर्माण जैसी गतिविधियां ज्ञान के प्रारंभिक रूप थे। सिंधु घाटी सभ्यता को भारतीय ज्ञान के प्रारंभिक संगठित स्वरूप का उदाहरण माना जा सकता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे नगरों की सुव्यवस्थित नगरीय योजना, जल निकासी प्रणाली, अनाज भंडारण, धातु विज्ञान और व्यापारिक संबंध यह दर्शाते हैं कि उस

समय भारतीय उपमहाद्वीप में वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान का विकास हुआ। यह ज्ञान अनुभव और पर्यवेक्षण पर आधारित था। किंतु भारतीय ज्ञान प्रणालियों की औपचारिक और दार्शनिक नींव वैदिक काल (लगभग 1500-600 ईसा पूर्व) में पड़ी। इस काल के चार प्रमुख वेद हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इन वेदों में मंत्र, सूक्त, यज्ञ-विधि, प्रकृति का वर्णन, खगोल संबंधी संकेत और सामाजिक जीवन के तत्व मिलते हैं। वैदिक काल में शिक्षा गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित थी। और ज्ञान मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता था। वैदिक काल के उत्तरार्ध में उपनिषदों की रचना हुई। उपनिषदों में अद्वैत, आत्मा-ब्रह्म की एकता, मोक्ष, कर्म और पुनर्जन्म जैसे सिद्धांत प्रतिपादित किए गए। इस काल में ज्ञान का स्वरूप अधिक चिंतनशील और तर्क प्रधान हो गया। महाकाव्य काल में रामायण और महाभारत नामक दो प्रसिद्ध ग्रंथो की रचना हुई। इनमें न केवल धार्मिक और नैतिक शिक्षाएं हैं बल्कि राजनीति, समाज, युद्ध नीति और दर्शन का भी वर्णन है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में बौद्ध और जैन परंपराओं का उदय हुआ। बुद्ध धर्म में मध्यम मार्ग, अहिंसा और करुणा का संदेश दिया गया। इसमें विचार विमर्श की परंपरा, तर्क और अनुभव पर बल दिया गया। वहीं जैन धर्म में अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकांतवाद का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया। इसमें तर्क और नैतिक अनुशासन को महत्व दिया गया। गुप्त काल में गणित, खगोल, चिकित्सा, दर्शन और साहित्य में उल्लेखनीय प्रगति हुई। दर्शन के क्षेत्र में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत दर्शनों का विकास हुआ। उनके अंतर्गत प्रत्यक्ष अवलोकन, तर्क और अनुमान को प्रमाण माना गया। भारतीय गणित ने विश्व को शून्य एवं दशमलव प्रणाली से अवगत कराया। एवं आयुर्वेद विश्व की प्राचीन चिकित्सा प्रणालियों में से एक है। चरक की चरक संहिता में आंतरिक चिकित्सा और सुश्रुत की सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा के महत्वपूर्ण प्राचीन भारतीय ग्रंथ है। मध्यकाल में भक्ति और सूफी आंदोलन ने मुस्लिम विद्वानों और भारतीय पंडितों के बीच बौद्धिक संवाद का अवसर प्रदान किया और एक **नवीन समन्वित संस्कृति** की अवधारणा का विकास हुआ। इस समय में ज्ञान को लोक भाषाओं में प्रसारित किया गया। ब्रिटिश शासन के दौरान पश्चिमी शिक्षा प्रणाली के लागू होने से इस काल में भारतीय पुनर्जागरण का उदय हुआ। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय आध्यात्मिकता को विश्व मंच पर प्रस्तुत किया, महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा और स्वदेशी पर आधारित ज्ञान को सामाजिक आंदोलन से जोड़ा और रविंद्रनाथ टैगोर जैसे महापुरुषों ने शिक्षा को प्रकृति और सृजनात्मकता से जोड़ने का प्रयास किया। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक विरासत दोनों को महत्व दिया गया। भारतीय ज्ञान प्रणालियों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एक निरंतर विकास की कहानी है यह परंपरा स्थिर नहीं रही, बल्कि समय-समय पर बदलती परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को अनुकूलित करती रही।

भारतीय ज्ञान प्रणालियां और सतत विकास लक्ष्य परस्पर पूरक हैं। जहां सतत विकास लक्ष्य विकास का व्यावहारिक और नीतिगत ढांचा प्रदान करता है, वहीं भारतीय ज्ञान प्रणालियां नैतिक और दार्शनिक आधार उपलब्ध कराती हैं। सतत विकास वह विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूरा करें कि भविष्य की पीढ़ियां अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से वंचित न हों। यह अवधारणा सन 1987 ई. में ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट '**our common future**' में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत की गई थी। यह परिभाषा स्पष्ट करती है कि विकास केवल आर्थिक वृद्धि नहीं है, बल्कि एक संतुलित प्रक्रिया है जिसमें पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था तीनों के बीच सामंजस्य हो। सतत विकास लक्ष्य इन तीनों आयामों को संतुलित रूप से आगे बढ़ाने का प्रयास करता है। सन 2015 में संयुक्त राष्ट्र के द्वारा सतत विकास के 17 लक्ष्यों को स्वीकार किया गया। जिसके अंतर्गत गरीबी उन्मूलन, भूख मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लैंगिक समानता, स्वच्छ जल और स्वच्छता, सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा, सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास, उद्योग एवं नवाचार और बुनियादी ढांचा, असमानताओं में कमी, टिकाऊ शहर और समुदाय, उत्तरदायी उपभोग और उत्पादन, जलवायु परिवर्तन से निपटना, पानी के नीचे जीवन, भूमि पर जीवन, शांति एवं न्याय और सशक्त संस्थाएं, वैश्विक साझेदारी को शामिल किया गया है। सतत विकास लक्ष्य सार्वभौमिक, एकीकृत और परिवर्तनकारी हैं। यह सभी देशों विकसित, विकासशील और अविकसित पर समान रूप से लागू होते हैं। भारत ने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सतत विकास लक्ष्यों को लागू करने के लिए नीतियां बनाई हैं। नीति आयोग इन लक्ष्यों की प्रगति की निगरानी करता है। भारत में स्वच्छ भारत मिशन, आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना और डिजिटल इंडिया आदि पहलें सतत विकास लक्ष्यों से जुड़ी कुछ प्रमुख योजनाएं हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और सतत विकास लक्ष्य एक-दूसरे के पूरक हैं। भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और सतत विकास लक्ष्य दोनों का उद्देश्य मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करना है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों का मूल दर्शन **समग्रता, संतुलन और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व** है, जो सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है। भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ और सतत विकास लक्ष्यों के बीच अंतरसंबंध को इस प्रकार समझ जा सकता है- आयुर्वेद "रोग निवारण" के साथ-साथ "स्वास्थ्य संवर्धन" पर जोर देता है। योग मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों को संतुलित करता है। आज विश्व स्तर पर योग को अपनाया जा रहा है, और अंतरराष्ट्रीय योग दिवस इसकी मान्यता का प्रमाण है। यह SDG 3 (Good Health and Well-being) को मजबूती देता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली, जैसे **गुरुकुल प्रणाली**, केवल ज्ञान नहीं बल्कि जीवन मूल्यों पर भी जोर देती थी। यह समग्र शिक्षा मॉडल SDG 4 (Quality Education) के अनुरूप है। प्राचीन भारत में जल संरक्षण की उन्नत प्रणालियाँ बावड़ी, तालाब और झीलें तथा वर्षा जल संचयन थीं। राजस्थान और गुजरात में आज भी इनका उपयोग होता है। यह SDG 6 (Clean Water and Sanitation) को समर्थन देता है। भारतीय दर्शन में "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का सिद्धांत सभी के कल्याण पर जोर देता है समाज में सहयोग और सह-अस्तित्व एवं महिलाओं की भूमिका यह

SDG 5 (Gender Equality) और SDG 10 (Reduced Inequalities) को समर्थन देता है। **अहिंसा** का सिद्धांत, जिसे महात्मा गांधी ने अपनाया, केवल मानव के लिए नहीं बल्कि प्रकृति और जीव-जंतुओं के लिए भी लागू होता है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों और सतत विकास लक्ष्यों के समन्वित एवं वैकल्पिक विकास मॉडल का समग्र विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि मानवता के सामने उपस्थित वर्तमान वैश्विक चुनौतियों का समाधान केवल तकनीकी या आर्थिक उपायों से संभव नहीं है। इसके लिए एक ऐसे बहुआयामी, नैतिक और समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें विकास को केवल भौतिक प्रगति के रूप में नहीं, बल्कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलित सह-अस्तित्व के रूप में समझा जाए। यही दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान परंपरा प्रदान करती है, और यही लक्ष्य सतत विकास एजेंडा भी प्राप्त करना चाहता है। अतः दोनों का समन्वय एक सशक्त, व्यावहारिक और दीर्घकालिक विकास मॉडल का निर्माण करता है। सबसे पहले, यह समझना आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ केवल अतीत की विरासत नहीं हैं, बल्कि वे एक जीवंत, गतिशील और प्रयोगशील ज्ञान प्रणाली हैं जिनका आधार अनुभव, अवलोकन, प्रकृति के साथ अंतःक्रिया और नैतिकता है। "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "अहिंसा" जैसे सिद्धांत केवल आध्यात्मिक आदर्श नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक संगठन के मूल आधार हैं। ये सिद्धांत हमें यह सिखाते हैं कि विकास का उद्देश्य केवल कुछ व्यक्तियों या राष्ट्रों का उत्थान नहीं, बल्कि समस्त मानवता और समस्त जीव-जगत का कल्याण होना चाहिए। दूसरी ओर, सतत विकास लक्ष्य भी इसी समावेशी और न्यायपूर्ण विकास की वकालत करते हैं। अतः दोनों के बीच वैचारिक समानता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। समन्वित विकास मॉडल का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि यह आधुनिक विकास की सीमाओं को पहचानते हुए एक संतुलित विकल्प प्रस्तुत करता है। वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था उपभोक्तावाद, असीमित उत्पादन और संसाधनों के अत्यधिक दोहन पर आधारित है जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असंतुलन उत्पन्न हुआ है। इसके विपरीत, भारतीय ज्ञान परंपरा "अपरिग्रह" (कम उपभोग), "संयम" और "संतोष" पर बल देती है जो संसाधनों के न्यायसंगत और टिकाऊ उपयोग को सुनिश्चित करती है। जब इन मूल्यों को सतत विकास लक्ष्यों के ढाँचे में समाहित किया जाता है, तो विकास केवल मात्रात्मक न रहकर गुणात्मक बन जाता है। इस समन्वित मॉडल का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष इसका "प्रकृति-केंद्रित" दृष्टिकोण है। भारतीय दर्शन में प्रकृति को एक जीवंत इकाई के रूप में देखा जाता है, न कि केवल संसाधन के रूप में। नदियों, पर्वतों, वृक्षों और पशु-पक्षियों को सम्मान देने की परंपरा पर्यावरण संरक्षण का एक सशक्त सांस्कृतिक आधार प्रदान करती है। सतत विकास लक्ष्यों में भी जलवायु कार्रवाई, जीवन भूमि पर और जीवन जल में जैसे लक्ष्य इसी दिशा में कार्य करते हैं, परंतु इन लक्ष्यों को प्रभावी बनाने के लिए केवल नीतियाँ पर्याप्त नहीं हैं इसके लिए समाज में एक गहरी सांस्कृतिक और नैतिक चेतना का विकास आवश्यक है, जो भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह मॉडल "स्थानीयकरण" (localization) को विशेष महत्व देता है। भारतीय परंपरा में ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था, स्थानीय संसाधनों का उपयोग और सामुदायिक सहभागिता प्रमुख रही है। यह दृष्टिकोण न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, बल्कि सामाजिक एकता और पर्यावरणीय संतुलन को भी सुदृढ़ करता है। सतत विकास लक्ष्यों को भी प्रभावी रूप से लागू करने के लिए स्थानीय स्तर पर क्रियान्वयन आवश्यक है। समन्वित विकास मॉडल का एक और महत्वपूर्ण पहलू "समग्रता" (holistic approach) है। **आधुनिक विकास मॉडल** प्रायः आर्थिक वृद्धि को प्राथमिकता देता है, जबकि भारतीय ज्ञान प्रणाली शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सभी आयामों को समान महत्व देती है। उदाहरण के लिए योग और आयुर्वेद केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जीवनशैली को संतुलित और स्वस्थ बनाने पर जोर देते हैं। इसी प्रकार, शिक्षा प्रणाली में केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों का विकास भी महत्वपूर्ण माना जाता है। जब इस समग्र दृष्टिकोण को सतत विकास लक्ष्यों के साथ जोड़ा जाता है, तो विकास अधिक मानवीय, संतुलित और टिकाऊ बनता है। हालाँकि, इस समन्वित मॉडल के कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। पारंपरिक ज्ञान का वैज्ञानिक सत्यापन, आधुनिक शिक्षा और नीति निर्माण में इसका समुचित समावेश, तथा वैश्वीकरण के प्रभावों के बीच इसकी प्रासंगिकता बनाए रखना आदि ये सभी महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। इसके अतिरिक्त, समाज में जागरूकता की कमी और पारंपरिक ज्ञान के प्रति उदासीनता भी एक बड़ी बाधा है। लेकिन इन चुनौतियों को उचित नीतियों, शिक्षा, अनुसंधान और जनसहभागिता के माध्यम से दूर किया जा सकता है। समाधान के रूप में यह आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाए, ताकि नई पीढ़ी अपने सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत से परिचित हो सके। साथ ही, पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच संवाद और समन्वय को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे एक सशक्त और नवाचारी विकास मॉडल का निर्माण हो सके। सरकार, शैक्षणिक संस्थानों और समाज के बीच सहयोग भी इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:- अंततः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों और सतत विकास लक्ष्यों का समन्वित एवं वैकल्पिक विकास मॉडल केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक और आवश्यक समाधान है जो वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। यह मॉडल हमें यह सिखाता है कि वास्तविक विकास वही है जो मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करे, सामाजिक न्याय सुनिश्चित करे और आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण करे। इस प्रकार, यदि हम इस समन्वित दृष्टिकोण को अपनाते हैं, तो हम न केवल सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि एक ऐसे विश्व का निर्माण भी कर सकते हैं, जो अधिक न्यायपूर्ण, संतुलित और सतत हो।

संदर्भ सूची

1. सिंह, उपेंदार (2009), A Histroy of Ancient and Early Medival India: From the stone age to the 12th centuary, Pearson Education.
2. शर्मा, आर. एस. (2006), India's Ancient Past, Oxford India Paperbook.
3. गांधी, महात्मा (2020), हिन्द स्वराज, मैपल क्लाससिक्स.
4. खान, सलीम एण्ड शर्मा, मीता (2024), An Overview of Indian Knowledge System, Integrated Journal for Research in Arts and Humanities, ISSN (Online): 2583-1712
5. कुमारी, डी (2024), Indian knowledge for Sustainable Futures, International Journal of Novel Research and Development, 9(3), d259-d262
6. ब्राण्डेन, के. वी. (2012), "Sustainable education: Basic Principle and Strategic recommendations", Journal School Effectiveness and School Improvement: An International Journal of Research, Policy and Practice, Vol. 23 No. 3, pp. 285-304
7. बिस्वास, एस (2021), Indian Knowledge system and NEP-2020 Scope, Challenges and Opportunitiy, National Journal of Hindi and Sanskrit Research, 1(39), 179-183
8. मोहंती, अतसी (2018), Education for sustainable development: A conceptual model of sustainable education for India, International journal of development and sustainability, ISSN: 2186-8662
9. पाउव, बी. जे., गेरिक, एन., ऑलस्सों, डी. एण्ड बर्गलुंड, टी. (2015), The effectiveness of education for sustainable development, Sustainability, Vol. 7 No. 11, pp. 15693-15717
10. प्रमानिक, संगीता, Impact of Indian Knowledge System on Sustainable Development Goals, https://www.kdpublications.in, ISBN: 978-81-974990-0-5

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.